(स्नातक - द्वितीय वर्ष , प्रथम प्रश्न पत्र)

भारत में निर्धनता

भारत में निर्धनता एक गंभीर सामाजिक-आर्थिक समस्या है और इसमें संरचनात्मक कारकों की भूमिका महत्वपूर्ण है । संरचनात्मक कारकों में जाति व्यवस्था , लिंग संबंधी असमानता , संसाधनों का असमान वितरण जैसे कारकों की निर्णायक भूमिका रही है । वर्तमान में कोविड-19 के संक्रमण और उसके प्रभावस्वरूप लागू किए गए रणनीतिक कदम व्यापक लाकडाउन ने अर्थव्यवस्था को गंभीर रूप से प्रभावित किया है तथा पहले से ही विद्यमान गरीबी की समस्या को और भी विकृत कर दिया है ।

भिन्न-भिन्न विचारकों ने निर्धनता के भिन्न-भिन्न कारण बतलाये हैं –

हेनरी जार्ज के अनुसार – दरिद्रता का मूल कारण भूमि पर व्यक्तिगत स्वामित्व और एकाधिकार है ।
मार्क्स के अनुसार – निर्धनता का कारण पूँजीपतियों का श्रमिकों की मजदूरी हड़प कर उनका शोषण करना है ।
माल्थस के अनुसार- निर्धनता का कारण यह है कि खाद्य सामग्री समानान्तर वृद्धि से बढ़ती है, जनसंख्या गुणोत्तर वृद्धि के अनुसार बढ़ती है ।
उपरोक्त विद्वानों ने निर्धनता के किसी एक कारण पर अत्यधिक बल दिया गया है परन्तु आजकल अधिकांश विचारक निर्धनता को एक से अधिक कारकों के कारण मानते हैं । पहले व्यक्ति के भाग्य या व्यक्ति के कर्म को ही उसकी निर्धनता के लिये उत्तरदायी ठहराया जाता था ।
परन्तु आज का आर्थिक संसार इतना जटिल है कि निर्धनता का कारण केवल व्यक्ति को ही नहीं माना जा सकता । **लैण्डिस और लैण्डिस ने लिखा है-** संसार में जहाँ आर्थिक खतरे इतने अधिक हैं, व्यक्ति को सदैव निर्धनता के लिये उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता ।

योजना आयोग ने गरीबी मापने की विधि की समीक्षा करने के लिए जून 2012 में सी. रंगराजन की अध्यक्षता में एक विशेषज्ञ समूह का गठन किया जिसने अपनी रिपोर्ट जून 2014 में प्रस्तुत की। इस विशेषज्ञ समूह ने अखिल भारतीय स्तर पर 2011-2012 में ग्रामीण क्षेत्रों के लिए ₹972 प्रति व्यक्ति प्रति माह व्यय तथा शहरी क्षेत्रों के लिए 1407 रुपए प्रति व्यक्ति प्रति माह व्यय को गरीबी रेखा का आधार माना है। अर्थशास्त्री रंगराजन की अध्यक्षता में गठित विशेषज्ञ समूह के अनुसार भारत में वर्ष 2011-2012 में गरीबी का अनुपात 29.5% था। जबकि तेंदुलकर समिति के अनुसार यह अनुपात 21.9% था।

भारत में निर्धनता के लिए उतरदायी कुछ महत्वपूर्ण कारक निम्नवत है-

जातिगत असमानता :

भारत में सदियों से मौजूद जाति व्यवस्था निर्धनता की समस्या के लिए गंभीर रूप से उतरदायी है । इसके कारण समाज में संसाधन के आसमान वितरण की व्यवस्था कायम रही है । जातिगत भेदभाव ने व्यक्तियों की क्षमता को प्रभावित किया है तथा इसने गरीबी को संरचनात्मक स्वरूप प्रदान करने का कार्य किया है ।

लैंगिक असमानता-

भारतीय समाज एक पितृसत्तात्मक समाज रहा है । यहां स्त्रियों को अनेक प्रतिबंधों के साये में अपना जीवन यापन करना होता है तथा समाज और परिवार से उपेक्षित जीवन जीना होता है । कोई भी समाज लगभग अपनी आधी आबादी को विकास की मुख्यधारा से उपेक्षित रखकर विकास और खुशहाली के मार्ग पर आगे नहीं बढ़ सकता ।

दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली :

शिक्षा प्रणाली का दोषपूर्ण होना निर्धनता का कारण है । उदाहरण के लिये भारत में प्रौद्योगिक प्रशिक्षण कम होने एवं डिग्री वाली शिक्षा अधिक होने के कारण यहाँ लाखों शिक्षित व्यक्ति बेकार हैं और निर्धनता का जीवन बिताते है । शिक्षा प्रणाली का दूसरा दोष उसका कीमती होना है । इससे निर्धन लोग उसका लाभ नहीं उठा पाते ।

मकानों की दुर्व्यवस्था:

गंदे और तंग गंदी बस्तियों में रहने वाले लोगों का स्वास्थ्य खराब हो जाता है जिनसे उनकी कार्य करने की क्षमता घट जाती है और आर्थिक स्थिति खराब हो जाती है ।

विवाह सम्बन्धी कुरीतियाँ:

भारतवर्ष में दहेज की प्रथा के कारण बहुत से परिवार जीवन भर निर्धन बने रहते है । लोग मर-मर कर कमाते हैं और पेट काट कर लड़कियों की शादी के लिए दहेज जोड़ने में सारा जीवन बिता देते है । शक्ति से अधिक दहेज देने वालों के परिवार बहुत निर्धन हो जाते है ।

अशिक्षा:

निर्धनता और अशिक्षा का भी परस्पर सम्बन्ध है । अशिक्षा से निर्धनता बढ़ती है क्योंकि अशिक्षित व्यक्ति की धन कमाने की सामर्थ्य बहुत कम रहती है । दूसरी ओर बहुत से लोग निर्धनता के

कारण अपनी शिक्षा जारी नहीं रख पाते और अशिक्षित रह जाते हैं । इस प्रकार निर्धनता और अशिक्षा एक दूसरे की सहायता करके गरीबों के दुःख बढ़ाती रहती हैं ।

कृषि सम्बन्धी कारण:

कृषि सम्बन्धी आर्थिक कारण जैसे - अच्छी खाद, सुधरे हुए औजारों, अच्छे बीजों, सिचाई के साधनों, अच्छे पशुओं आदि का अभाव, रोग नाशक कीड़ों तथा पशुओं से खेती की रक्षा का उचित प्रबन्ध न होना, अन्धविश्वास, जमीन के छोटे-छोटे टुकड़े होना ऋणग्रस्तता आदि से किसान सदैव निर्धन बना रहता है ।

असमान वितरण:

यदि उत्पादन काफी भी हो तब भी अनेक देशों में असमान वितरण के कारण लाखों किसान और मजदूर निर्धनता का जीवन बिताते है । पूँजीवादी व्यवस्था में धनिक और भी धनी होते हैं और निर्धन और भी निर्धन हो जाते है ।

आर्थिक अपकर्ष:

आर्थिक अपकर्ष से व्यापार में मन्दी आ जाती है, सैकड़ों कारखाने बन्द हो जाते है और हजारों लाखों मजदूर तथा छोटा-मोटा धन्धा करने वाले बेकार हो जाते हैं ।

बेकारी:

बेकारी दरिद्रता का सबसे बड़ा आर्थिक कारण है । अधिकतर दरिद्रता बेकारी के कारण है । भारतवर्ष जैसे देश में बेकारी दरिद्रता का सबसे बड़ा कारण है ।

स्वास्थ्य रक्षा की अपर्याप्त व्यवस्था:

बीमारी निर्धनता का प्रमुख कारण है । अस्वास्थ्यकर पर्यावरण में रहने से व्यक्ति की कार्यक्षमता भी घटती है । बीमारी के कारण कमाने वाले की मृत्यु हो जाने या नौकरी छूट जाने से घर का घर दरिद्र हो जाता है । बीमारी से व्यक्ति की आय का एक बड़ा भाग उसके उपचार में लग जाता है । अत: स्वास्थ्य रक्षा की पर्याप्त व्यवस्था के अभाव में निर्धनता जड़ जमाकर बैठ जाती है ।

जनसंख्या वृद्धि :

किसी भी देश की जनसंख्या वृद्धि और उपलब्ध संसाधनों के बीच संतुलन आवश्यक है । भारत राष्ट्र जनसंख्या विस्फोट के दौर से गुजर रहा है । जनसंख्या के अत्यधिक बढ़ जाने से सबकी आवश्यकताओं की भली प्रकार पूर्ति नहीं हो पाती और देश में निर्धनता फैलती है ।

यातायात के साधनों का अभाव आदि उद्योग और व्यापार की उन्नति में बाधक जितने भी कारक हैं उन सभी से निर्धनता बढ़ती है । अतः निर्धनता स्वयं निर्धनता बढ़ने का सबसे बड़ा कारण है ।

निर्धनता उन्मूलन संबंधी उपाय:-

(i) कृषि की उन्नति:
भारतीय किसान बड़ा निर्धन है क्योंकि भारत में प्रति एकड़ पैदावार अन्य देशों से बहुत कम है । पुराने ढर्रे की खेती, गोबर को जला देना, सिंचाई की कमी, ऋणग्रस्तता, शादी विवाह आदि अवसरों पर अत्यधिक खर्च अनावृष्टि, अतिवृष्टि, खेतों का छोटे-छोटे टुकड़ों में बंटा होना, किसान का अपने खेतों पर स्वामित्व न होना आदि भारत में कम उत्पादन के कारण हैं । सरकार को इन सभी कारणों को दूर करने के उपाय करने होंगे ।

(ii) शक्ति का विकास:
कृषि को उन्नति के साथ-साथ शक्ति का विकास करना भी आवश्यक है क्योंकि उसके बिना उद्योगों का विकास नहीं हो सकता और उद्योगों का विकास किये बिना केवल खेती के सहारे निर्धनता दूर करना असम्भव है । भारत में जल-विद्युत बनाने की सम्भावना बहुत अधिक है ।

(iii) छोटे तथा कुटीर उद्योगों का विकास:
भारत की निर्धनता का एक बड़ा कारण अंग्रेजों के जमाने में कुटीर उद्योगों का नष्ट हो जाना भी है । भारत में किसान वर्ष में कई महीने कोई काम नहीं करता । काम के अभाव में अधिकतर लोग मजदूरी या नौकरी की तरफ भागते हैं । अतः छोटे तथा कुटीर उद्योगों के विकास तथा उनके उत्पादन के बेचने का समुचित प्रबन्ध होना आवश्यक है ।

(iv) बड़े उद्योगों का विकास:
बड़े उद्योगों का विकास किये बिना छोटे उद्योगों का बढ़ाना भी कठिन हो जाता है । इस्पात खनिज तेल, यातायात तथा सन्देशवहन के साधन तथा परमाणु शक्ति आदि के विकास के बिना आधुनिक युग में किसी भी देश की आर्थिक उन्नति असम्भव है ।

इनके अतिरिक्त लोहा, एल्यूमिनियम, सीमेंट, रेयान तन्तु, पैट्रोल, रेल के इंजन, डीजल गाड़ियाँ, बाइसिकिल, बिजली की मोटरें, रासायनिक पदार्थ, सूती कपड़े, खाद, चीनी, पटसन, मशीनें, जलयान, पेन्सिलीन आदि की वस्तुओं के विकास के लिये बड़े उद्योगों की आवश्यकता है । इनसे राष्ट्रीय आय बढ़ेगी । राष्ट्रीय आय से प्रत्येक व्यक्ति आय बढ़ेगी । प्रति व्यक्ति आय बढ़ने से दरिद्रता दूर होगी ।

(v) शिक्षा:

गरीबी को दूर करने के लिए शिक्षा की बड़ी आवश्यकता है । साथ ही उच्च शिक्षा और स्त्री उच्च शिक्षा की ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है । इसमें भी औद्योगिक प्रशिक्षण की ओर विशेष रूप में ध्यान देने की आवश्यकता है । इससे उत्पादन बढ़ेगा और निर्धनता दूर होगी ।

(vi) बेकारी उन्मूलन:

भारत में निर्धनता का एक बड़ा कारण बेकारी है । यह बेकारी शिक्षित और अशिक्षित सभी लोगों में है । इससे देश की बहुत सी मनुष्य शक्ति व्यर्थ जा रही हैं और गरीबी बढ़ती जाती है । अतः बेकारी उन्मूलन निर्धनता को दूर करने की दिशा में अनिवार्य कदम है ।

(vii) सामाजिक बीमा:

निर्धनता का एक बड़ा कारण असहायों, वद्धों, अनाथों और बेरोजगारों का बेसहारा होना है । अधिकतर निर्धनता इन्हीं लोगों में पाई जाती है । सामाजिक बीमा योजना से इनकी निर्धनता दूर की जा सकती है ।

(viii) न्यायपूर्ण वितरण:

केवल उत्पादन बढ़ने से ही किसी देश की निर्धनता दूर नहीं की जा सकती जब तक कि राष्ट्रीय आय का न्यायपूर्ण वितरण न किया जाये । सरकार को इस ओर दृढ़ कदम उठाने की आवश्यकता है ।

(ix) परिवार नियोजन:

यदि भारत की जनसंख्या इसी प्रकार से बढ़ती रही तो उत्पादन बढ़ने पर भी देश की आर्थिक अवस्था में अधिक सुधार न हो सकेगा भारत की निर्धनता का एक बड़ा कारण तेजी से बढ़ती हुई जनसंख्या है । अत: परिवार नियोजन द्वारा जनसंख्या को सन्तुलित करने की आवश्यकता है ।

(x) न्यूनतम मजदूरी का निश्चय:

भारत में किसानों के साथ-साथ मजदूरों में भी घोर दरिद्रता है । इसका कारण मालिकों द्वारा उनका शोषण है । वे उनको कम से कम मजदूरी देकर उनसे अधिक से अधिक काम लेने की चेष्टा करते हैं । सरकार को न्यूनतम मजदूरी को निश्चित करके इस शोषण को रोकना चाहिये ।

(xi) मद्य निषेद्य:

भारत में निर्धनता का एक कारण मद्यपान है । मद्य-निषेध के लिये सरकारी कानून और सामाजिक प्रचार द्वारा प्रयास होना चाहिये ।

(xii) आवास की समुचित व्यवस्था:

भारत के नगरों में हजारों मजदूर रात को फुटपाथ पर जमीन पर सोते है । उनके रहने के लिये मकान नहीं है । मध्यवर्ग की आय का एक बड़ा भाग मकान के भाड़े के रूप में दे देना पड़ता है । इससे निर्धनता बढ़ती है । अत: रहने की समुचित व्यवस्था होनी आवश्यक है ।

निर्धनता को रोकने के उपायों के उपरोक्त वर्णन से यह स्पष्ट होता है कि इसके लिये किसी एक दिशा में काम करना पर्याप्त नहीं होगा, बल्कि सभी दिशाओं में चेष्टा करनी होगी ।

संदर्भ सूची –

1. hindilibraryindia.com
2. सामाजिक समस्याएं – राम अहूजा , रावत प्रकाशन , जयपुर ।
3. सामाजिक विघटन – जी. के. अग्रवाल , साहित्य भवन , आगरा ।
4. सामाजिक समस्याएं – क्रानिकल , नई दिल्ली ।